# ७. स्वराज्य का प्रशासन

शिवाजी महाराज ने स्वराज्य की स्थापना की। स्वयं का राज्याभिषेक करवाया । राज्याभिषेक के पश्चात उन्होंने दक्षिण का विजयी अभियान चलाया। स्वराज्य का विस्तार हुआ । इस स्वराज्य में नाशिक, पुणे, सातारा, सांगली, कोल्हापुर, सिंधुदुर्ग, रत्नागिरि, रायगढ़ और ठाणे जिलों के बहुत से प्रदेशों का अंतर्भाव था । साथ ही; कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु राज्यों के कुछ हिस्से स्वराज्य में समाविष्ट थे । इस तरह विस्तारित स्वराज्य का प्रशासन सुचारु रूप से चले, स्वराज्य में लोगों का कल्याण हो; इस उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए शिवाजी महाराज ने स्वराज्य को सुस्थिति प्रदान की । इस विषय की जानकारी हम प्राप्त करेंगे ।

**अष्टप्रधान मंडल :** शिवाजी महाराज ने राज्याभिषेक के अवसर पर अष्टप्रधान मंडल का गठन किया । राज्य प्रशासन की सुविधा की दृष्टि से उसे आठ विभागों में बाँटा गया । प्रत्येक विभाग हेतु एक प्रमुख की नियुक्ति की गई । आठ विभागों के आठ प्रमुख मिलकर 'अष्टप्रधान मंडल' बना । इन प्रमुखों की नियुक्ति करना अथवा उन्हें उनके पद से हटाना शिवाजी महाराज के अधिकार में था। ये विभाग प्रमुख अपने-अपने विभाग को लेकर शिवाजी महाराज के प्रति उत्तरदायी थे ।

शिवाजी महाराज ने गुणवत्ता और कार्य देखकर अष्टप्रधान मंडल का चुनाव किया । उन्हें वतन, पुरस्कार अथवा जागीरें नहीं दीं लेकिन नकद वेतन भरपूर दिया ।

**कृषि विषयक नीति :** गाँव-देहात का मुख्य व्यवसाय कृषि था । शिवाजी महाराज कृषि के महत्त्व को जानते थे । अतः उन्होंने किसानों के हितों को वरीयता दी । उन्होंने अपने पराक्रमी और अनुभवी अधिकारी अण्णाजी दत्तो को भू-राजस्व के प्रबंधन का दायित्व सौंपा । उन्होंने अधिकारियों को चेतावनी दे रखी थी कि वे निर्धारित राशि से अधिक राजस्व इकट्ठा न करें। बंजर भूमि को उपज योग्य बनाने के लिए प्रोत्साहन दिया । अतिवृष्टि या अकाल पड़ने पर फसल नष्ट होती है अथवा शत्रुसेना गाँव को ध्वस्त करती है तो ऐसी स्थिति में गाँववालों को भू-राजस्व (लगान) और अन्य करों में छूट दी जाती थी । साथ ही; शिवाजी महाराज ने अधिकारियों को आदेश दे रखा था कि ऐसे समय किसानों को बैलों की जोड़ी, हल और बोआई के लिए अच्छे बीज दिए जाएँ ।

**शिवाजी महाराज का अष्टप्रधान मंडल**

| | प्रधान का कार्य | पद | कार्य |
|---|---|---|---|
| १. | मोरो त्रिंबक पिंगळे | प्रधान | राज्य का शासन चलाना तथा विजित प्रदेश की व्यवस्था चलाना । |
| २. | रामचंद्र नीलकंठ मुजुमदार | अमात्य | राज्य का आय-व्यय देखना । |
| ३. | अण्णाजी दत्तो | सचिव | सरकारी आदेशपत्र भेजना । |
| ४. | दत्ताजी त्रिंबक वाकनीस | मंत्री | पत्रव्यवहार करना । |
| ५. | हंबीरराव मोहिते | सेनापति | सेना का प्रबंध देखना और राज्य की रक्षा करना । |
| ६. | रामचंद्र त्रिंबक डबीर | सुमंत | अन्य राज्यों से संबंध रखना । |
| ७. | निराजी रावजी | न्यायाधीश | न्याय करना । |
| ८. | मोरेश्वर पंडितराव | पंडितराव | धार्मिक कार्य/विधि देखना । |

**तत्कालीन देहातों की अर्थनीति :** कृषि व्यवसाय देहात की अर्थनीति की रीढ़ था । देहातों में कृषि व्यवसाय के पूरक व्यवसाय चलते हैं । गाँव के श्रमिक (कारीगर) वस्तुओं का उत्पादन करते थे । वे स्थानीय लोगों की आवश्यकताएँ पूर्ण करते थे । इस अर्थ में देहात आत्मनिर्भर थे । किसान अपनी उपज में से कारीगरों को उनकी आवश्यकतानुसार हिस्सा दिया करते थे । इस हिस्से को 'पौनी (पावना)' कहते थे ।

**व्यापार और उद्योग :** शिवाजी महाराज जानते थे कि जब तक व्यापार में वृद्धि नहीं होती; तब तक राज्य समृद्ध नहीं बनता । व्यापारियों के कारण राज्य में नव-नवीन और आवश्यक वस्तुएँ आती हैं। वस्तुएँ विपुल मात्रा में उपलब्ध होती हैं । व्यापार में वृद्धि होती है । संपत्ति बढ़ती है । शिवाजी महाराज के आदेशपत्र में एक वर्णन पाया जाता है- 'साहूकार (व्यापारी) राज्य और राजश्री की शोभा है।' यह वर्णन शिवाजी महाराज के व्यापारियों की ओर देखने के दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है । 'साहूकार' शब्द का अर्थ व्यापारी है ।

शिवाजी महाराज की नीति स्वराज्य के उद्योगों को संरक्षण देने की थी । इसका उत्तम उदाहरण नमक उद्योग है । उन्होंने कोकण में चलने वाले नमक के उद्योग को संरक्षण दिया। उस समय स्वराज्य में पुर्तगालियों के आधिपत्यवाले प्रदेश से नमक का आयात बड़ी मात्रा में होता था । इसका कोकण में चलने वाली स्थानीय नमक की बिक्री पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता था। इसे ध्यान में रखकर शिवाजी महाराज ने पुर्तगालियों के प्रदेश से आनेवाले नमक पर बहुत बड़ी चुंगी (कर) लगाई थी । उद्देश्य यह था कि पुर्तगालियों से आनेवाला नमक महँगा होकर उसका आयात कम हो जाए और स्थानीय नमक की बिक्री बढ़े ।

**सेना व्यवस्था :** शिवाजी महाराज की सेना में दो विभाग थे । एक थलसेना और दूसरी अश्वसेना। थलसेना में हवलदार, जुमलेदार जैसे अधिकारी थे। थलसेना प्रमुख को 'सरनोबत' कहते थे । सरनोबत थलसेना का सर्वोच्च अधिकारी था ।

अश्वसेना में दो प्रकार के घुड़सवार थे । एक शिलेदार और दूसरा बारगीर । शिलेदार के पास स्वयं का घोड़ा और शस्त्र होते थे । बारगीर को सरकार की ओर से घोड़ा और शस्त्र दिए जाते । अश्वसेना में बारगीरों की संख्या अधिक थी । अश्वसेना में अधिकारियों की श्रेणियाँ थलसेना की भाँति ही थीं । अश्वसेना का सर्वोच्च अधिकारी 'सरनोबत' था । नेतोजी पालकर, प्रतापराव गुजर, हंबीरराव मोहिते जैसे शिवाजी महाराज की अश्वसेना के कुछ ख्यातिप्राप्त सरनोबत थे ।

**समझें**

भारतीय रक्षा विभाग के सेना दलों की जानकारी प्राप्त करो ।

- तीनों सेना विभागों के नाम बताओ ।
- प्रत्येक सेना विभाग के प्रमुख को क्या कहते हैं?
- तीनों सेना विभागों का प्रमुख कौन होता है ?

**गुप्तचर विभाग :** शत्रुओं से स्वराज्य की रक्षा करना आवश्यक था । इसके लिए शत्रुओं की गतिविधियों की अचूक जानकारी समय पर प्राप्त करनी पड़ती थी । यह जानकारी प्राप्त करना और उसे शिवाजी महाराज को सौंपने का कार्य उनके गुप्तचर विभाग के प्रमुख का था । उनका गुप्तचर विभाग बहुत कार्यक्षम था । बहिर्जी नाईक उनके गुप्तचर विभाग का प्रमुख था । वह अलग-अलग स्थानों की जानकारी प्राप्त कर लाने में पारंगत था । सूरत अभियान के पूर्व वह वहाँ की छोटी-सी-छोटी बात की जानकारी ले आया था ।

**किले :** मध्यकाल में किलों का असाधारण महत्त्व था । यदि किला अपने नियंत्रण में हो तो आसपास के प्रदेश पर ध्यान रखा जा सकता है तथा नियंत्रण भी रखा जा सकता है । विदेशी आक्रमण होने पर किले के सहारे प्रजा की रक्षा भी की जा सकती है । किले में अनाज, युद्ध के लिए आवश्यक

सामग्री, गोला-बारूद का संग्रह किया जा सकता है। स्वराज्य स्थापना के कार्य में निहित किलों का महत्त्व आदेशपत्र में इस प्रकार बताया गया है, 'यह राज्य तो पूजनीय ज्येष्ठ स्वर्गवासी स्वामीजी ने गढ़ द्वारा ही निर्माण किया है ।'

स्वराज्य में ३०० किले थे । शिवाजी महाराज ने इन किलों के निर्माण और मरम्मत पर बहुत बड़ा व्यय किया । राजगढ़, प्रतापगढ़, पावनगढ़ जैसे पहाड़ी किलों का निर्माण करवाया । प्रत्येक किले पर किलेदार, सबनीस और कारखानीस ये अधिकारी होते थे । किले पर अनाज के गोदाम और युद्ध सामग्री का प्रबंधन कार्य देखने के लिए एक अधिकारी होता था; जिसे कारखानीस कहते थे।

**क्या तुम जानते हो ?**

शिवाजी महाराज के दुर्ग निर्माण संबंध में छत्रपति संभाजी महाराज द्वारा उनके ग्रंथ 'बुधभूषण' में लिखित वर्णन उल्लेखनीय है । वह इस प्रकार है :

'कर्नाटक प्रदेश से लेकर बागलाण प्रदेश तक शत्रुओं के लिए अभेद्य दुर्ग, जैसे कई दुर्ग छत्रपति शिवाजी महाराज ने सह्याद्रि पर्वत के ऊँचे पठारों की श्रेणियों में स्थान-स्थान पर बनवाए । इसका उद्देश्य इस पृथ्वी की रक्षा करना था । उनके सफल नेतृत्व के कारण कृष्णा नदी के तट से लेकर समुद्र के चारों दिशाओं के आसपास इन किलों का निर्माण करवाया । छत्रपति शिवाजी महाराज रायरी किले में विजयी और समस्त राजाओं में अग्रसर रहे ।'

**जलदुर्ग (समुद्री किले):** शिवाजी महाराज समुद्री किलों के महत्त्व से भली-भाँति परिचित थे । उनके द्वारा निर्माण करवाए गए जलदुर्गों में मालवण का सिंधुदुर्ग उत्कृष्ट समुद्री किला है । इस किले के निर्माण में मजबूती लाने के लिए उन्होंने किले की नींव में सौ मन सीसा उँड़ेलवाने का प्रबंध किया

पद्मदुर्ग

था। सिद्दी पर दबाव बनाए रखने के लिए उन्होंने राजापुरी के सामने पद्मदुर्ग नामक समुद्री किले का निर्माण करवाया । इस किले के विषय में वे अपने एक पत्र में लिखते हैं, 'पद्मदुर्ग बँधवाकर एक राजपुरी के उर पर दूसरी राजपुरी बनाई ।'

**नौसेना :** भारत के पश्चिमी तट पर गोआ के पुर्तगाली, जंजीरा के सिद्दी, सूरत और राजापुर के गोदामवाले अंग्रेज स्वराज्य के शत्रु थे और वे स्वराज्य के विस्तार कार्य में बाधा उत्पन्न करते थे। इन बाधाओं पर अंकुश रखना और पश्चिमी तट का संरक्षण करना आवश्यक था । इसके लिए शिवाजी महाराज ने नौसेना का निर्माण करवाया । वे जानते थे, 'जिसके पास नौसेना, समुद्र उसी का।' शिवाजी महाराज दूरदर्शी थे ।

शिवाजी महाराज की नौसेना में विविध प्रकार के चार सौ जलपोत थे । उनमें गुराब, गलबत और पाल युद्धपोत थे । इन जलपोतों का निर्माण कल्याण-भिवंडी की खाड़ी, विजयदुर्ग और मालवण में करवाया जाता था । मायनाक भंडारी और दौलत खान नौसेना के प्रमुख अधिकारी थे ।

गुराब

गलबत

**करके देखो**

भारतीय नौसेना में कार्यरत युद्धपोतों की जानकारी प्राप्त करो और उन जलपोतों के चित्रों का संग्रह करो ।

**प्रजा के हितों के प्रति जागरूक :** अन्य दूसरे शासकों अथवा राजाओं की भाँति शत्रु के आधिपत्य वाले प्रदेश को जीतना और वहाँ अपना प्रभुत्व जमाना; इतनी सीमित आकांक्षा को लेकर शिवाजी महाराज ने कार्य नहीं किया । प्रजा को स्वतंत्र बनाना उनका उद्देश्य था। यदि प्रजा स्वतंत्रता का सही अर्थ में आनंद प्राप्त करना चाहती है तो शासन का प्रशासन अनुशासनबद्ध होना चाहिए, प्रजा के हितों के प्रति सर्वांगीण रूप से सजग रहना चाहिए और विजित प्रदेशों की रक्षा करनी चाहिए; यह बोध उन्हें था । शिवाजी महाराज केवल सत्ताधीश नहीं थे अपितु प्रजाहितों के प्रति एक सजग शासक थे और यह बात उनके राज्य प्रशासन से स्पष्ट होती है ।

## स्वाध्याय

**१. पहचानो तो :**

(१) आठ विभागों का मंडल –

(२) बहिर्जी नाईक इस खाते का प्रमुख था –

(३) शिवाजी महाराज द्वारा निर्मित मालवण के समीप का जलदुर्ग –

(४) किले में युद्ध सामग्री का प्रबंधन रखने वाला –

**२. अपने शब्दों में लिखो :**

(१) शिवाजी महाराज की कृषि विषयक नीति ।

(२) शिवाजी महाराज : प्रजाहितों के प्रति एक सजग शासक

**३. क्यों; यह बताओ :**

(१) शिवाजी महाराज ने अष्टप्रधान मंडल का गठन किया ।

(२) शिवाजी महाराज ने नौसेना का निर्माण करवाया ।

**४. प्रवाही तालिका पूर्ण करो :**

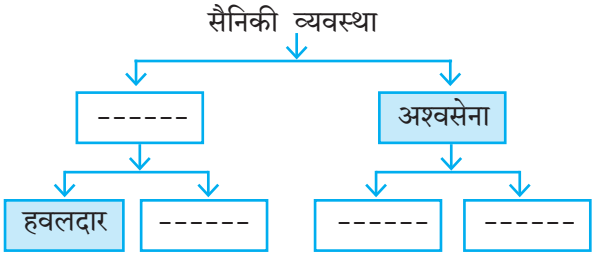


**उपक्रम**

(१) तुम्हारे परिसर में रहने वाले उस व्यक्ति से साक्षात्कार करो; जो भारतीय सेना में कार्य कर चुका है।

(२) अपने गाँव के बाजार में जाओ और परिसर में तैयार होनेवाली वस्तुओं और बाहरी स्थानों से विक्रय हेतु आई हुई वस्तुओं की सूची बनाओ ।

सिंधुदुर्ग